http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 6, 01-03

Article ID:589

विकसित कृषि से साकार होगा विकसित भारत का सपना

डॉ. किरण एन. पटेल[1], डॉ. स्वाति एस. शर्मा[2]

[1]सहायक प्राध्यापक
ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान
नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

[2]प्रोफेसर
ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान
नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

*अनुरूपी लेखक
डॉ. स्वाति एस. शर्मा*

भारत एक कृषि प्रधान देश है। आज भी देश की लगभग आधी आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। कृषि केवल अन्न उत्पादन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था, रोजगार, ग्रामीण विकास और सामाजिक स्थिरता की आधारशिला भी है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। हरित क्रांति, श्वेत क्रांति और आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रयोग ने देश को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया है। फिर भी किसानों की आय, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण और कृषि की घटती लाभप्रदता जैसी चुनौतियाँ आज भी मौजूद हैं।

भारत वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि कृषि विकसित होगी, किसान समृद्ध होगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी, तभी विकसित भारत का सपना साकार हो सकेगा।

भारतीय कृषि का महत्व

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार है। देश की खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण रोजगार और अनेक उद्योगों की कच्चे माल की आवश्यकता कृषि से ही पूरी होती है। वस्त्र उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, डेयरी उद्योग तथा कृषि आधारित अनेक छोटे-बड़े उद्योग कृषि पर निर्भर हैं।

कृषि का महत्व केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत के गांवों की संस्कृति, परंपराएं और जीवन शैली कृषि से जुड़ी हुई हैं। इसलिए कृषि का विकास केवल उत्पादन बढ़ाने का कार्य नहीं, बल्कि समग्र ग्रामीण विकास का माध्यम भी है।

विकसित कृषि की आवश्यकता

वर्तमान समय में कृषि अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। बढ़ती जनसंख्या के कारण खाद्यान्न की मांग निरंतर बढ़ रही है। दूसरी ओर खेती योग्य भूमि सीमित होती जा रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और तापमान में वृद्धि जैसी समस्याएं किसानों को प्रभावित कर रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में पारंपरिक कृषि पद्धतियों के साथ-साथ आधुनिक तकनीकों को अपनाना आवश्यक हो गया है। विकसित कृषि का अर्थ केवल अधिक उत्पादन नहीं, बल्कि टिकाऊ, लाभकारी, तकनीक-संचालित और पर्यावरण-अनुकूल कृषि व्यवस्था से है।

आधुनिक तकनीक और कृषि विकास

आज विज्ञान और तकनीक कृषि क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहे हैं। ड्रोन तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), सैटेलाइट आधारित निगरानी और डिजिटल कृषि प्लेटफॉर्म किसानों को अधिक जानकारी और बेहतर निर्णय लेने में सहायता प्रदान कर रहे हैं।

ड्रोन के माध्यम से खेतों में उर्वरकों और कीटनाशकों का छिड़काव कम समय में किया जा सकता है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों को मिट्टी की गुणवत्ता की जानकारी देता है, जिससे वे आवश्यकतानुसार उर्वरकों का उपयोग कर सकते हैं। मौसम पूर्वानुमान सेवाएं किसानों को समय पर खेती संबंधी निर्णय लेने में मदद करती हैं। तकनीक आधारित कृषि न केवल उत्पादन बढ़ाती है, बल्कि लागत कम करके किसानों की आय में भी वृद्धि करती है।

सिंचाई और जल प्रबंधन का महत्व

कृषि विकास के लिए जल संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। भारत के कई क्षेत्रों में आज भी कृषि वर्षा पर निर्भर है। अनियमित मानसून किसानों के लिए बड़ी चुनौती बन जाता है। सूक्ष्म सिंचाई तकनीक जैसे ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई जल संरक्षण के साथ-साथ उत्पादन बढ़ाने में सहायक हैं। "प्रति बूंद अधिक फसल" की अवधारणा जल संकट से निपटने का प्रभावी उपाय है। जल संचयन, तालाब निर्माण, वर्षा जल संग्रहण और भूजल संरक्षण जैसे उपाय कृषि को स्थायी और सुरक्षित बना सकते हैं।

जैविक और प्राकृतिक खेती

विकसित कृषि का एक महत्वपूर्ण आयाम जैविक और प्राकृतिक खेती भी है। रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरण दोनों प्रभावित होते हैं।

जैविक खेती से मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है, पर्यावरण सुरक्षित रहता है और उपभोक्ताओं को स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं। वर्तमान समय में जैविक उत्पादों की मांग देश और विदेश दोनों बाजारों में तेजी से बढ़ रही है। इससे किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्त करने के अवसर भी मिलते हैं।

कृषि विविधीकरण और मूल्य संवर्धन

कृषि को अधिक लाभकारी बनाने के लिए केवल पारंपरिक फसलों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। बागवानी, फूलों की खेती, मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, डेयरी, कुक्कुट पालन और औषधीय पौधों की खेती जैसे क्षेत्रों में अपार संभावनाएं हैं।

इसके साथ-साथ कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन भी आवश्यक है। यदि किसान अपनी उपज को सीधे प्रसंस्कृत उत्पादों में परिवर्तित कर बाजार तक पहुंचाए, तो उसे अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

किसान सशक्तिकरण और बाजार सुधार

कृषि विकास का वास्तविक लाभ तभी मिलेगा जब किसान आर्थिक रूप से सशक्त होगा। किसानों को आधुनिक प्रशिक्षण, गुणवत्तापूर्ण बीज, सस्ती ऋण सुविधा, फसल बीमा और बाजार तक आसान पहुंच उपलब्ध कराना आवश्यक है। डिजिटल प्लेटफॉर्म और ई-मार्केटिंग व्यवस्था किसानों को बेहतर मूल्य दिलाने में सहायक सिद्ध हो रही है। किसान उत्पादक संगठन (FPO) छोटे किसानों को सामूहिक शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे वे बाजार में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। कृषि क्षेत्र में निवेश, भंडारण सुविधाओं का विकास तथा आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत बनाना भी अत्यंत आवश्यक है।

आत्मनिर्भर भारत और कृषि

आत्मनिर्भर भारत का आधार आत्मनिर्भर कृषि है। यदि देश का किसान मजबूत होगा तो देश की खाद्य सुरक्षा भी मजबूत होगी। कृषि निर्यात को बढ़ावा देकर भारत वैश्विक बाजार में अपनी मजबूत पहचान बना सकता है। भारत आज चावल, गेहूं, मसाले, फल, सब्जियां और दुग्ध उत्पादन में विश्व के अग्रणी देशों में शामिल है। आधुनिक तकनीक और

गुणवत्ता मानकों के माध्यम से कृषि निर्यात को और बढ़ाया जा सकता है। इससे विदेशी मुद्रा अर्जित होगी तथा किसानों की आय में वृद्धि होगी।

विकसित भारत के निर्माण में कृषि की भूमिका

विकसित भारत का अर्थ केवल औद्योगिक विकास या आधुनिक शहरों का निर्माण नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है ऐसा राष्ट्र जहां गांव और शहर दोनों समान रूप से विकसित हों, किसानों को सम्मानजनक जीवन मिले, रोजगार के पर्याप्त अवसर हों और हर नागरिक को समृद्धि का लाभ प्राप्त हो। कृषि क्षेत्र में सुधार से ग्रामीण आय बढ़ेगी, गरीबी कम होगी, रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे और सामाजिक असमानता में कमी आएगी। विकसित कृषि ग्रामीण भारत को नई ऊर्जा प्रदान करेगी, जो विकसित भारत की मजबूत नींव बनेगी।

उपसंहार

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का मार्ग खेतों और किसानों की समृद्धि से होकर गुजरता है। आधुनिक तकनीक, जल संरक्षण, जैविक खेती, कृषि विविधीकरण, मूल्य संवर्धन तथा किसान सशक्तिकरण जैसे उपाय कृषि क्षेत्र को नई दिशा दे सकते हैं। जब किसान समृद्ध होगा, गांव आत्मनिर्भर बनेंगे और कृषि लाभकारी होगी, तब विकसित भारत का सपना वास्तविकता में बदल सकेगा।

अतः यह कहना बिल्कुल उचित है कि "विकसित कृषि से ही विकसित भारत का सपना साकार होगा।" कृषि के सर्वांगीण विकास के माध्यम से ही भारत 2047 तक एक समृद्ध, आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर सकेगा।